शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-३

माह : सितम्बर २०२०

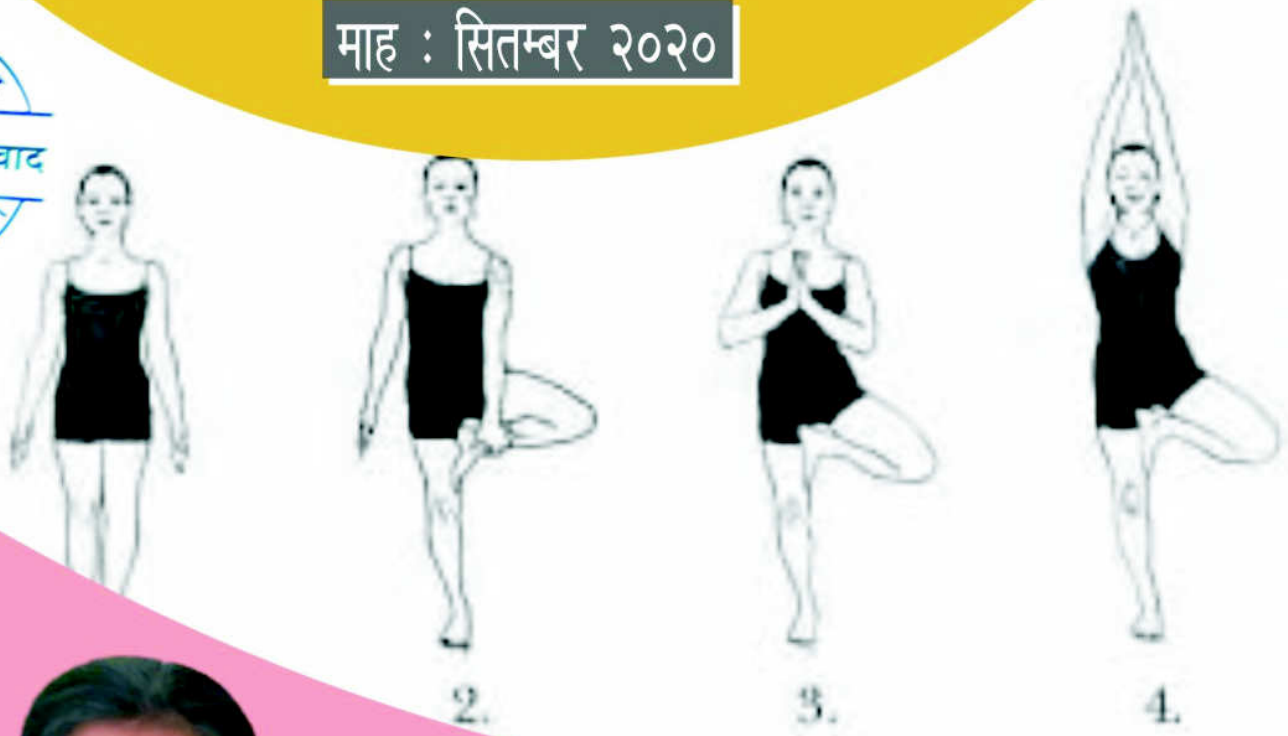

योग करो स्वस्थ रहो

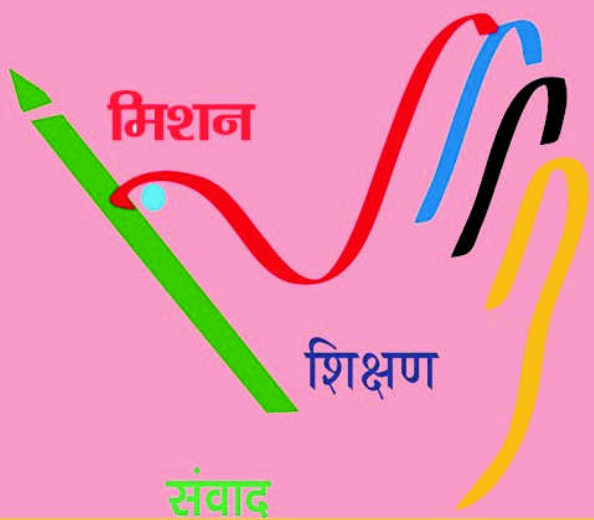

"महान विचार ही कार्य रूप में परिणत होकर महान कार्य बनते हैं।"

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-३

माह- सितम्बर २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

वर्तमान समय शिक्षा में वृहद परिवर्तन का दौर है। जितनी तेजी से आज शिक्षा का विकास होते देखा जा रहा है। कालान्तर में ऐसा परिवर्तन कभी देखने को नहीं मिला। आज उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था तेजी से डिजिटल हुई जा रही है। जो समय व श्रम दोनों की बचत कर रही है। यद्यपि संख्या कम है परन्तु आज हम कक्षाकक्षों से गृहकक्षों तक शिक्षा को पहुँचाने में सफल रहे हैं। परिवर्तनकामी शिक्षकों ने सिद्ध कर दिया कि वे किसी भी महामारी के आगे विवश नहीं होंगे अपितु उसे धता बताकर शिक्षण पथ पर अडिग रहेंगे।

मिशन शिक्षण संवाद ने शिक्षकों में ऐसी ललक जगा रखी है जो उन्हें नित नए नवाचार करने के लिए प्रेरित करे रहती है। मिशन शिक्षण संवाद से किसी शिक्षक का जुड़ना ही इस बात का परिचायक है कि उसमें शिक्षा के प्रति एक विशेष अंतर्दृष्टि उत्पन्न हो चुकी है। जटिल से जटिल प्रकरणों पर सरल से सरल कविता बना पाने का हुनर वास्तव में मिशन शिक्षण संवाद की ही देन है। नवाचारी शिक्षकों को एक मंच पर लाना, उन्हें जोड़े रखना और उनकी प्रतिभा का सही से उपयोग करने की यह मुहिम निश्चित रूप से बेसिक शिक्षा के लिए उत्तम सिद्ध हो रही है।

प्रसन्नता की बात है कि मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका पिछले दो वर्ष से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। मैं पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि विभिन्न शिक्षण विधाओं और शैक्षिक लेखों से भरपूर यह पत्रिका यूँ ही सफलता के नए मुकाम देखती रहे।

(स्कन्द गुप्त)

खण्ड शिक्षा अधिकारी

विकास क्षेत्र – अराजीलाइन्स

जनपद – वाराणसी

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

शिक्षा वह है जो सक्षम बनाए। सक्षमता से तात्पर्य केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता से नहीं है अपितु बालक के सर्वांगीण विकास से है। देश को न तो नैतिकता और मानवता से रहित आर्थिक सम्पन्न नागरिक चाहिए। न ही उच्च नैतिकता से भरे विपन्न नागरिक। देश को समदर्शी नागरिक ही उच्चता के शिखर तक ले जा सकते हैं। वास्तविक अर्थों में शिक्षा वही मानी जाएगी जो इन सभी पहलुओं को साथ लेकर चले।

मिशन शिक्षण संवाद का सदैव से यही उद्देश्य रहा है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ही बात हो। इसीलिए मिशन शिक्षण संवाद की टीमें दैनिक श्यामपट्ट से लेकर योग और नैतिक प्रभात से लेकर दैनिक शिक्षण के लिए उत्तम सामग्रियाँ उपलब्ध करा रही हैं। मिशन शिक्षण संवाद अपने उद्देश्य शिक्षा का उत्थान के लिए कृतसंकल्पित है। शिक्षा के प्रति समर्पित कुछ शिक्षक दिन–रात कड़ी मेहनत करके पूरे प्रदेश के विद्यार्थियों को लाभ पहुँचा रहे हैं। आज मिशन शिक्षण संवाद का यूट्यूब चैनल अभिभावकों तक भी पहुँच गया है और वहाँ से वे अपने बच्चों को उपयुक्त शैक्षिक वीडियो से लाभान्वित कर रहे हैं।

मिशन शिक्षण संवाद की निःशुल्क ऑनलाइन पत्रिका शिक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों को अपने में समेटे एक उपयोगी पत्रिका है। विभिन्न शिक्षकों के विचारों और गतिविधियों का ये दस्तावेज संवाद का प्रमुख साहित्य है। आशा है कि पत्रिका का ये अंक आपको अवश्य पसन्द आएगा।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2–3
अनमोल बाल रत्न	4–5
विचारशक्ति–1	6
विचारशक्ति–2	7–8
निन्दक नियरे राखिये	9
बात महिला शिक्षकों की	10
बाल कविता–1	11
बाल कविता–2	12
टी.एल.एम.संसार	13
English Medium Diary	14–15
प्रेरक प्रसंग	16
बाल कहानी	17
बाल फिल्म	18
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	19
खेल विशेष	20–22
योग विशेष	23–24
शिक्षण तकनीक	25–27
सदविचार	28
नवाचार	29

मिशन गीत

बेसिक के सम्मान को वापस लाना है
मैं अध्यापक हूँ मुझे जमके पढ़ाना है

ये बच्चे जिस सफर के मुसाफिर हैं
इन्हें इनकी मंजिल तक पहुँचाना है

हम अध्यापक हैं हमें जमके पढ़ाना है

सरकारी तो बस सरकारी स्कूल है
लोगों के मन से भ्रम को मिटाना है

हम अध्यापक हैं हमें जमके पढ़ाना है

हमारे बच्चे ले सकें टक्कर कॉन्वेंट से
उनके ज्ञान को ऐसे स्तर तक बढ़ाना है

अब न रहे अंधेरा किसी छप्पर के नीचे
हर घर में शिक्षा का दीप जलाना है

बेसिक के सम्मान को वापस लाना है
हम अध्यापक हैं हमें जमके पढ़ाना है

असगर अली,
प्राथमिक विद्यालय शुक्लापुर
(अंग्रेजी माध्यम)
विकास खण्ड–रुदौली,
ज्नपद–अयोध्या।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४६५ पल्लवी वर्मा उ0प्रा0वि0 बिलसडी खुर्द, वि०क्षे० – पुवायाँ, शाहजहाँपुर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_273.html

४६६ डॉ० दीपिका सिंह (सहायक अध्यापक – विज्ञान) उच्च प्राथमिक विद्यालय कादराबाद ब्लॉक – समरेर, जनपद – बदायूं (उत्तर प्रदेश)
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_463.html

४६७ योगेंद्र कुमार उच्च प्राथमिक विद्यालय (संविलियन) घटोली, विकास क्षेत्र–पिलाना, जनपद – बागपत, राज्य–उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_493.html

४६८ उषा भट्ट (स०अ०) रा०पू०मा०वि० गढी श्यामपुर, ब्लाक – डोईवाला जिला – देहरादून (उत्तराखण्ड)
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_310.html

४६९ वंदना (स०अ०) प्राथमिक विद्यालय, गुमानीखेड़ा, ब्लॉक – मोहनलालगंज, जनपद –लखनऊ
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_897.html

४७० सरिता महेंद्र सिंह प्राथमिक विद्यालय सुल्तानपुर (अंग्रेजी माध्यम) सिरकोनी, जनपद – जौनपुर, राज्य– उ०प्र०
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_975.html

४७१ राजीव कुमार गुप्ता (इं.प्र.अ.) प्रा0 वि0 कवा ब्लॉकः ऐरवाकटरा जनपदः औरैया
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_367.html

४७२ शालिनी प्रजापति विद्यालय – प्राथमिक विद्यालय पीरपुर, ब्लॉक – परसेण्डी, जनपद – सीतापुर, राज्य – उ०प्र०
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_706.html

४७३ लाल बहादुर यादव (प्रधानाध्यापक) कन्या प्राथमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) शुदनीपुर, मड़ियाहूं, जौनपुर, उत्तरप्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_519.html

४७४ मोहम्मद राशिद कादरी (इं०प्र०अ०), पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुरैनी, ब्लॉक – दातागंज, जनपद – बदायूं, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_957.html

४७५ प्रतिभा शर्मा सहायक अध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रघुनाथपुर ब्लॉक व जनपद – हापुड़, उ०प्र०
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_1.html

४७६ गीता यादव (प्रधानाध्यापिका) प्रा0 वि0 नवादा ब्लॉक– दादरी गौतम बुद्ध नगर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_9.html

४७७ संजय कुमार (स.अ.) प्राथमिक विद्यालय तुलसीपुर दक्षिणी, ब्लॉक – तुलसीपुर, जनपद – बलरामपुर, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_85.html

अनमोल बाल रत्न

योग प्रतियोगिता

नाम - रोहित

उच्च प्राथमिक विद्यालय करनपुर विकास क्षेत्र बिसौली जिला बदायूँ में कक्षा आठ में पढ़ने वाले छात्र रोहित ने जून 2019 में लखनऊ में आयोजित राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में बहुत अच्छा प्रदर्शन करते हुए 75 जनपदों में से सत्रहवाँ स्थान प्राप्त किया। scert के निदेशक श्री संजय सिन्हा जी ने मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

अनमोल बाल रत्न

छात्रा का नाम- स्वाती केसरवानी

कक्षा-8 (पूर्व छात्रा)

विद्यालय का नाम- पूर्व माध्यमिक विद्यालय चित्रवार

क्षेत्र- मऊ, जनपद- चित्रकूट

प्रतियोगिता का नाम- बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ

प्रतियोगिता का स्तर- जनपद स्तर

स्थान- टॉप फाइव जूनियर वर्ग में- प्रथम

कार्य क्षेत्र- TLM निर्माण, कविता लेखन, बाल वैज्ञानिक

मार्गदर्शक- शिक्षक का नाम- राज कुमार शर्मा (प्र.अ.)

संकलन- मिशन शिक्षण संवाद

विचारशक्ति–1

शिक्षा और शिक्षक

शिक्षण संवाद

शिक्षा मनुष्य के जीवन का एक आधारभूत अंग है जो उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती है। शिक्षा अर्थात् ''सीखना'' मनुष्य की जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। वह जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है और इस सीखने के क्रम में प्राथमिक शिक्षा का मनुष्य के जीवन में विशेष स्थान है। जैसा कि ''फ्रायड'' महोदय ने कहा भी है कि ''मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है वह शुरुआत के चार – पाँच वर्षों में बन जाता है।'' अर्थात् बालकों को शुरुआती चार – पाँच वर्षों में मिलने वाली शिक्षा व मार्गदर्शन कहीं न कहीं उनके भविष्य निर्माण में महती भूमिका निभाती है। बालकों को दी जाने वाली प्राथमिक शिक्षा उन्हें उनकी रुचियों, क्षमताओं और विशेषताओं के उन्मुखीकरण में अत्यंत सहायक होती है और इस प्राथमिक शिक्षा व बाल शिक्षार्थियों के मध्य एक सेतु का कार्य करता है प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक।

यह शिक्षक ही वह कड़ी है जो शिक्षा के विभिन्न चमत्कारों, विभिन्न आयामों से शिक्षार्थियों का परिचय करवाता है। शिक्षक ही इन कच्ची मिट्टी रूपी बाल मन में शिक्षा की कलम से उनके उज्ज्वल भविष्य का भाग्य लिखता है। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका प्रत्येक मनुष्य के जीवन में एक विशेष स्थान रखती है।

अतः एक शिक्षक के रूप में यह हम सभी की प्राथमिक जिम्मेवारी बनती है कि हम अपने कर्तव्यों का निर्वाह पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करें क्योंकि कोई भी बाल शिक्षार्थी भविष्य में कैसा मार्ग अपनाएगा और क्या बनेगा इसका कहीं न कहीं दायित्व हमारा भी होगा।

अर्षिता सैनी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय जोगीपुर,
विकास खण्ड–बावन, जनपद–हरदोई।

विचारशक्ति–2

बालश्रम से बिछुड़ता बचपन

शिक्षण संवाद

बाल श्रम – अर्थ– बालक – बालिकाओं के द्वारा उनकी आयु सीमा के विपरीत सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में कार्य करवाना बाल – श्रम की श्रेणी में आता है। ओह! हम यह क्या सुन रहे हैं? हम अपने आसपास क्या देख रहे हैं? ये चारों ओर का दृश्य और यह विषय कितना चिंतनीय है। बाल – श्रम नाम में एक बहुत बड़ा अपराध छिपा हुआ है जो भविष्य के उजाले को अंधकार की ओर ले जा रहा है।

आईए मित्रो! बालश्रम को एक विश्लेषण से समझने की कोशिश करते हैं....!

ज़रा देखिए क्या है? बाल श्रम

बाल श्रम, भारतीय संविधान के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से कारखाने, दुकान, रेस्तरां, होटल, कोयला खदान, पटाखे के कारखाने आदि जगहों पर कार्य करवाना बाल श्रम है। बाल श्रम में बच्चों का शोषण भी शामिल होता है, शोषण से आशय, बच्चों से ऐसे कार्य करवाना, जिनके लिए वे मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार न हों।

यह भी समझिए–

भारत के संविधान में मूल अधिकारों के अनुच्छेद 24 के अंतर्गत भारत में बाल श्रम प्रतिबंधित है। बाल श्रम का मुख्य कारण गरीब बच्चों के माता–पिता का लालच, असंतोष होता है। लालची माता–पिता अपने ऐशो–आराम के लिए बच्चों से मज़दूरी कराते हैं। जिससे बच्चे न ही स्कूल जा पाते हैं और न ही ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं।

बचपन बिछुड़ता बालश्रम–

बचपन, जिंदगी का बहुत खूबसूरत सफ़र होता है। बचपन में न कोई चिंता होती है, न कोई फ़िक्र होती है, एक निश्चिंत जीवन का भरपूर आनंद लेना ही बचपन होता है। लेकिन कुछ बच्चों को बचपन में लाचारी और ग़रीबी की नज़र लग जाती है। जिस कारण से उन्हें बाल श्रम जैसी समस्या का सामना करना पड़ता है। बाल श्रम वर्तमान समय में बच्चों की मासूमियत के बीच अभिशाप बनकर सामने आता है।

बाल श्रम के दुष्प्रभाव से बचपन खतरे में

बच्चों के विकास में रुकावट – बाल श्रम का सबसे ज़्यादा असर बच्चों के विकास पर होता है, बाल मजदूरी से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। जिस उम्र में बच्चों को खेल–कूद कर, शिक्षा लेकर अपना विकास करना चाहिए, उस उम्र में उन्हें मज़दूरी करना पड़ती है।

बाल श्रमिकों का अधिक शोषण –

बाल मज़दूरों का उनके मालिक द्वारा अधिक शोषण किया जाता है। बाल मज़दूर कम मज़दूरी लेकर ज़्यादा काम करने के लिए राज़ी हो जाते हैं एवं उनसे मनचाहा काम कराया जाता है। दिन भर तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

बालक शिक्षा से वंचित –

परिवार में आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के कारण बच्चे बाल मज़दूरी करने पर मजबूर हो

जाते हैं। परिवार के जीवन पोषण के लिए दिन – रात एक करने में लगे रहते हैं और वे जीवन भर शिक्षा से वंचित रहते है। शिक्षा उनके जीवन से कोसों दूर रहती है।

भविष्य की ज़िंदगी दाँव पर–

बड़े– बड़े कारखाने, कोयले की खदानें, पटाखों की फैक्टरी आदि में कार्य करने से बाल श्रमिकों की ज़िंदगी हमेशा दाँव पर लगी रहती है। किस वक्त, क्या घटना घटित हो कुछ कहना असम्भव है।

बाल श्रमिकों हेतु क्या क्या व्यवस्थाएँ होनी चाहिए? यह भी जानना ज़रूरी है

बाल श्रमिक स्कूल – सरकार द्वारा बाल मजदूरों के लिए बाल श्रमिक स्कूल खुलवाने चाहिए। जो उन्हें उनके काम के बाद शिक्षा प्रदान करें। निःशुल्क शिक्षा– सरकार द्वारा सभी सरकारी स्कूलों की शिक्षा, दसवीं कक्षा तक निःशुल्क कर देना चाहिए। ऐसा करने से सभी गरीब बच्चे हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर सकते हैं एवं उन्हें रोज़गार भी आसानी से प्राप्त हो सकेंगे। जिससे उनका भविष्य सुनहरा बन सके।

क्या है बाल श्रम अधिनियम 1986–

बाल श्रम एक सामाजिक बुराई है जो एक समाज के एक कमज़ोर वर्ग की ग़रीबी व अशिक्षा से जुड़ी है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्स मूलर ने कहा है कि "पश्चिम में बच्चे दायित्व समझे जाते हैं जबकि पूर्व में बच्चे सम्पति'' यह कथन भारत के संदर्भ में शत–प्रतिशत सही है। 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चे जो नियोजित हैं, उन्हें बाल श्रमिक कहा जाता है, जिनके हित संरक्षण हेतु बाल श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 बनाया गया है जिसकी धारा–3 के अंतर्गत अधिसूचित खतरनाक क्षेत्रों में बाल श्रमिक नियोजन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

क्या कहता है बाल श्रम संशोधन विधेयक 2016? संशोधन के मुख्य तथ्य–

इस विधेयक के अनुसार चौदह वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना संज्ञेय अपराध माना जाएगा। इसके लिए नियोक्ता के साथ–साथ माता–पिता को भी दंडित किया जाएगा। विधेयक में चौदह से अठारह वर्ष के बीच के बच्चों को किशोर के रूप में परिभाषित किया गया है। इस आयु वर्ग के बच्चों से किसी खतरनाक उद्योग में काम नहीं कराया जाएगा। किसी बच्चे को काम पर रखने पर कैद की अवधि छह महीने से दो साल तक बढ़ा दी गयी है। अभी तक इस अपराध के लिये तीन महीने से एक साल तक की कैद की सज़ा का प्रावधान था। जुर्माना बढ़ाकर बीस हज़ार रुपये से पचास हज़ार रुपये तक कर दिया गया है। दूसरी बार अपराध करने पर एक साल से तीन साल तक की कैद का प्रावधान है।

आवश्यक है समाधान–

आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने वाले परिवारों के यहाँ जन्म लेने वाले बच्चों को बालश्रम से गुज़रना पड़ता है। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में बालश्रम पर कानून के मुताबिक रोक लगानी चाहिए। जिससे बालकों के बचपन की खुशियों में चार चाँद लगें। उनका बचपन बालश्रम से छिनने को मजबूर न हो। सरकार और आर्थिक रूप से समृद्ध लोग बालश्रम को रोकने में सहयोग करें। हम सभी मिलकर अपने आसपास के वातावरण को शिक्षा से जोड़ें जिससे हमें भविष्य में बालश्रम के दृश्य देखने को न मिलें। बालश्रम एक अपराध है, इस अपराध को जड़ से मिटाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा।

कुमार जितेन्द्र ''जीत''
कवि, लेखक, विश्लेषक, वरिष्ठ अध्यापक–गणित,
साईं निवास मोकलसर, तहसील–सिवाना,
जनपद–बाड़मेर, राजस्थान।

निन्दक नियरे राखिये

निन्दा और तारीफ़

शिक्षण संवाद

निंदक नियरे राखिए– इस कथन को तो आपने बहुत बार सुना होगा, पर क्या आपने कभी इन पंक्तियों का अपनी निजी जिंदगी में एहसास किया है? विचार करें हमने एहसास किया है जब भी मेरे द्वारा कोई अच्छा या नेक काम किया जाता है मेरे कुछ मित्र उसमे हमेशा कमियों का पुलिंदा खड़ा करते रहे तब भी मैं अपने नेक पथ पर चलता रहा, कभी रुका नहीं कभी डिगा नहीं, जीवन पथ पर चलता रहा और हमेशा अपने उन मित्रों को अपने आपसे जोड़े रखा और जब भी मेरे अच्छे कामों के लिए उनके द्वारा मेरे काम मे कमियाँ निकाली जाती हैं। हमें लगता है हम अपने सही पथ पर आगे बढ़ रहे है और इनके द्वारा मेरी जो भी निंदा की जा रही है उसमें ही हम सुधार ला दें तो हम बहुत सफल इंसान हो सकते हैं। हम जब भी अपनी निन्दा सुनते हैं तो हमे बुरा लगता है किंतु हमे उन व्यक्तियों को ज्यादा महत्व देना चाहिए जो हमारी निन्दा करते हैं जबकि जो व्यक्ति हमारी बिना किसी बात के प्रशंसा करते हैं ऐसे लोगो से हमें ज्यादा होशियार रहना चाहिए क्योंकि वो हमें अपने चाटुकारी स्वभाव से खुश तो कर देते है पर हमारे मन और मस्तिष्क दोनों को कमजोर कर देते हैं।

अतः हमें हमेशा अपने निंदक को अपने पास ही रखना चाहिए जो हमें जीवन के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते हैं बस हमें हमेशा उसे सकारात्मक पक्ष की तरफ लेके जाना चाहिए।

प्रदीप कुमार तिवारी,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिंगरों,
विकास खण्ड–फ़ख़रपुर,
जनपद–बहराइच।

बात महिला शिक्षकों की

नारी कभी न हारी

शिक्षण संवाद

असूर्यम्पशा, जी हाँ! यह एक ऐसा शब्द है जो पुरातत्वकाल से लगभग मध्यकाल तक हम महिलाओं के लिए प्रयुक्त होता था। जिसका अर्थ है– ''जो कभी सूर्य को न देख सके'' अर्थात चहारदीवारी में कैद रहे। किन्तु हमारे कुछ विचारकों, समाज सुधारकों के अथक प्रयास से इस कुप्रथा पर अंकुश लगा और हम महिलाओं ने भी विदुषी, चिकित्सक, पायलट तथा शिक्षिका जैसे अनेक गौरवान्वित पदों को सुशोभित किया।

तो चलिए आज हम महिला शिक्षिकाओं की बात करते हैं जो स्वयं जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए भी अपने विद्यालय में सर्वोत्तम देने का प्रयास करती रहती हैं। अपने निजी झंझावातों से पृथक वह उन नवीनतम पौधों को सँवारने में संलग्न रहती हैं जो कल के भविष्य हैं जिनमें कल का भारत विद्यमान है। किन्तु हम आपको बताते चलें कि यह सब करना आसान नहीं होता विशेषकर तब जब पूर्णतया समर्पित होने के बाद भी एक शिक्षिका के ऊपर प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है और यह पल तब और असहनीय व पीड़ादायक होता है, जब रास्तों या फिर कार्यस्थल पर किसी व्यभिचारी की दृष्टि उस पर पड़ती है। जरूरी नहीं कि ऐसा सभी के साथ हो किन्तु ऐसी घटनाएँ हर शिक्षिका के मन को नकारात्मकता से भर देती हैं।

लेकिन धन्य है वो महिला जो एक नदी की भाँति अडिग, निश्छल, निर्भीक, निर्विकार एवं निर्विवाद रूप से अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अग्रसर होती रहती है। किसी कवि ने क्या खूब लिखा है–

''कोमल है कमज़ोर नहीं है, शक्ति का नाम नारी है।
जग को जीवन देने वाली, नारी कभी न हारी है।''

कुसुम मिश्रा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गनेशपुर,
विकास खण्ड–भियाँव, जनपद–अम्बेडकर नगर।

बाल कविता

शिक्षण संवाद

Little Bird

Little Bird Little Bird
Little bird little bird
Where is your bed?
I have a little bed
You can say nest.

What do you eat?
I eat little insect.

Where do you fly?
I fly in the sky.
How do you fly?
Wings help to fly.
I want to fly with you
In the sky just like you.
No no you can't fly
Wings needs to fly.

Little girl little boy
Sky is high high high.

रंजना डुकलान,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय धौडा
विकास खण्ड–कल्जीखाल,
जनपद–पौड़ी गढ़वाल।

बाल कविता

शिक्षण संवाद

हफ्ते में होते दिन सात,
क्या कहते हैं सात,
रहना हमें साथ–साथ,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

पहला दिन है रविवार,
क्या कहता है रविवार,
सूरज एक, चन्दा एक,
है धरती एक,
है हम सब एक,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

दूसरा दिन है सोमवार,
क्या कहता है सोमवार,
सुबह–सवेरे होकर तैयार,
स्कूल में जाकर पढ़–लिखकर,
बन जाओ होशियार,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

तीसरा दिन है मंगलवार,
क्या कहता है मंगलवार,
मंगल ग्रह लाल–लाल,
चमके जैसे दाने अनार,
बढ़ते रहो तुम लगातार,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

चौथा दिन है बुधवार,
क्या कहता है बुधवार,
बुध ग्रह सबसे छोटा,
है सूरज के सबसे पास,
छोटे हो पर हो तुम नवाब,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

पाँचवाँ दिन है गुरुवार,
क्या कहता है गुरुवार,
गुरु ग्रह सबसे बड़ा,
करता है सबका भला,
तुम भी बनो दयावान,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

छठवाँ दिन है शुक्रवार,
क्या कहता है शुक्रवार,
शुक्र है चमकीला ग्रह,
चमके जिससे आसमान,
तुम भी चमको बनकर महान,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।

सातवाँ दिन है शनिवार,
क्या कहता है शनिवार,
शनिवार है अन्तिम दिन,
मौज करो पूरे दिन,
होम–वर्क करना अगले दिन,
हफ्ते में होते दिन सात,
रहना हमें साथ–साथ।।

अर्चना गुप्ता,
प्रभारी अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय सिजौरा,
विकास खण्ड–बंगरा,
जनपद–झाँसी।

20 शब्दों से 625 वाक्य बनाओ

उद्देश्य– यह एक अंग्रेजी का टीएलएम जिसमें कि 20 शब्दों से हम 625 सेंटेंस बनाना बच्चों को सिखा सकते हैं। यह बहुत ही उपयोगी टीएलएम है।

कक्षा – 3,4,5

आवश्यक सामग्री– कार्ड शीट, स्केच पेन, फेवीकोल, कैंची।

कक्षा में उपयोग– इसमें हम बच्चों को एक–एक करके बुलाते हैं और प्रत्येक बच्चे को पहले समझा देते हैं कि तुम्हें इन शब्दों को पढ़ना है और उसके बाद शब्दों को मिलाकर एक वाक्य बनाना है। इस प्रकार से बच्चा एक–एक शब्द को पढ़ता है और उससे एक पूरा वाक्य बनाता है। वह हर लाइन के शब्दों को पढ़ेगा और उससे एक वाक्य तैयार करेगा। इससे बच्चों में बोलने की क्षमता का विकास होता है और वह अंग्रेजी बोलने में हिचकते नहीं हैं। शब्द बहुत ही छोटे होते हैं जिससे कि वह 625 जैसे छोटे–छोटे वाक्य बना सकते हैं।

यह बहुत ही उपयोगी टीएलएम है और इसमें बच्चे खेल–खेल में पढ़ते व वाक्य को बनाना आसानी से सीख सकते हैं। मैंने अपनी कक्षा में इसका प्रयोग किया और देखा कि बच्चे इस टीएलएम में बहुत ही रुचि लेकर दिखाते हैं और उन्हें अंग्रेजी के छोटे–छोटे वाक्य पढ़ने आ जाते हैं और सरलता से वाक्य बना सकते हैं। इसलिए हम यह भी नाम दे सकते हैं 20 शब्दों से 625 वाक्य बनाओ और पढ़ाते जाओ।

रेनू शर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

English Medium Diary

ENGLISH MEDIUM SCHOOL OF BASIC EDUCATION

As English is the international language in present for connectivity to the world, the step of state govt. of U.P. of converting some "Hindi Medium Schools" of Basic into "English Medium Schools" is worth appreciating.

Advantage of English Medium Schools of Basic

1. Many students of Basic want to study in English medium school but due to poverty their parents are unable to send them in private Eng. medium school. So, now these students can study in Eng. medium school of Basic without any consumption.

2. Admission in Eng. medium school at an early age will help the students to understand and speak English in higher education in future.

3. English is the language of computer, internet & technology. So students can learn computer easily through these Eng. medium schools.

4. If any student knows Eng. then in future he/she can work anywhere in the world to make his/her career as English is the most widely spoken language throughout the world.

5. There are so many local languages in india like Hindi, Bengali, Marathi, Tamil, Telugu etc but English is commnon in all states. So, English is the best language in india to communicate with people of different state and Religion.

Need of Some Improvement in Eng. Medium Schools of Basic

No doubt, the first step of govt. is admirable but through some improvement, result of Eng. medium can be make more good in future-

1. With Principal and Teachers there must be clerk, peon, sweeper, gardener etc in every Eng. medium school for giving proper environment in school.

2. Computer lab, Science lab, library, power supply, water supply etc facilities must be in school.

3. Instead of changing Upper Primary School from Hindi medium to English medium, govt. should make new schools in each block in which only those students will take asmission who are really interested to study in Eng. medium school.

4. Only teaching work should be taken from teachers, so that they can give their best to the students in school.

5. As the purpose of education is "All-round development" of child, so Co-Curricular Activities (CCAs) must be include in curriculum in Eng. medium schools of Basic Education.

Sushant Saxena
A. T.
U. P. S. Parsiya (Eng. Med.)
Block- Asafpur
District- BudaunState- U. P.

प्रेरक प्रसंग

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षण संवाद

हर साल 5 सितम्बर को देश में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सम्मान में मनाया जाता है। हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्म 5 सितम्बर 1888 को मद्रास से 40 मील दूर छोटे से कस्बे तिरुतनी में हुआ था। वह एक महान शिक्षक, दार्शनिक व विद्वान थे।

वैसे तो उनका पूरा जीवन ही प्रेरणादायक है, लेकिन उनके जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग हमें बहुत कुछ सीख देते हैं। जब डॉ० राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ छात्रों ने उनका जन्मदिन मनाना चाहा तो उन्होंने कहा कि, ''मेरा जन्मदिन मनाने की बजाय अगर 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाए तो यह मेरे लिए गर्व की बात होगी।'' तभी से उनके सम्मान में हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने यह घोषणा की, कि सप्ताह में दो दिन कोई भी व्यक्ति उनसे बिना पूर्व अनुमति के मिल सकता है। इस प्रकार उन्होंने राष्ट्रपति भवन को आम लोगों के लिए भी खोल दिया। इस प्रसंग से डॉ० राधाकृष्णन जी के सरल, सहज व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है। मनुष्य को ऊँचाई पर पहुँचने के बाद भी सरलता और सहजता नहीं छोड़नी चाहिए। यह एक महान व्यक्तित्व की पहचान है।

विनीत शर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय केशोराय,
विकास खण्ड–टूंडला,
जनपद–फिरोजाबाद।

बाल कहानी

जैसे को तैसा

शिक्षण संवाद

"जैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ करते हैं, नियति भी वैसा ही व्यवहार हमारे लिए निश्चित करती है।"

एक बार की बात है। एक सेब वाले ने एक पान वाले के सामने ठेला लाकर खड़ा कर दिया। तो पान वाला रस से भरे सेब को देखकर बोला– "मुझे तुम सेब दे दो, मैं तुम्हें बदले में पान दूँगा।" सेब वाला बोला ठीक है। पान वाले ने एक छोटा सा पान बनाकर दे दिया।

जब सेब वाले ने चूने के लिए पूछा तो पान वाला बोला– "जाओ उस लाल दीवार में रगड़ो तो तुम्हें चूना मिल जाएगा।" सेब वाला समझ गया कि पान वाला ठीक नहीं है। उसने पान वाले को हरे–हरे सेब दे दिए। तो पान वाला बोला– "यह तो हरे सेब हैं, मुझे लाल सेब चाहिए।"

तब सेब वाला बोला– "जाओ तुम भी उस लाल दीवार में अपने सेब रगड़ो, तुम्हारे सेब भी लाल हो जाएँगे।" इतना सुनते ही उसे सब समझ में आ गया। किसी ने सच ही कहाँ है कि ''जैसे को तैसा मिले तभी सच्चा ज्ञान मिलेगा।''

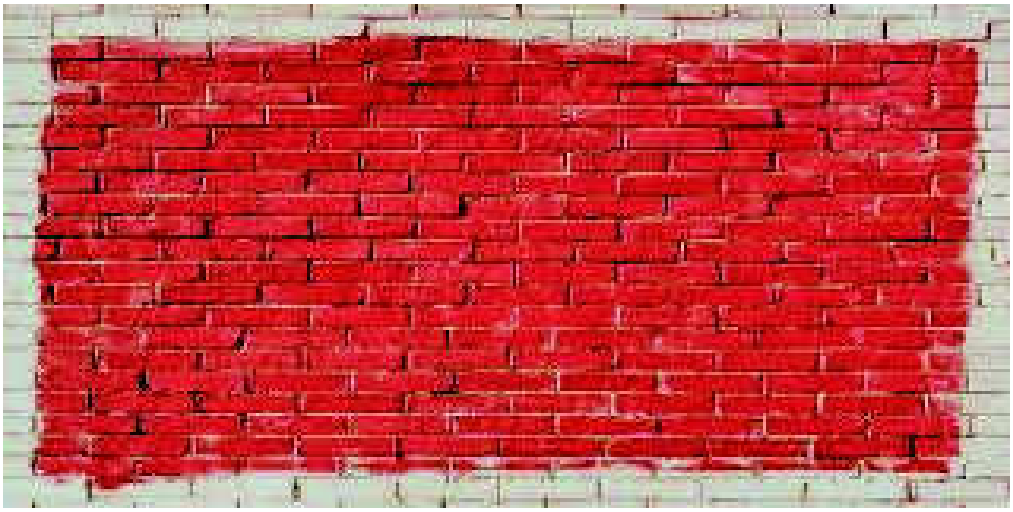

निशु तिवारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिरसिंहपुर,
विकास खण्ड–भीतरगाँव,
जनपद–कानपुर नगर।

बाल फिल्म

अंग्रेजी मीडियम

शिक्षण संवाद

नमस्कार साथियों,

मैं आज एक ऐसी फिल्म के बारे में चर्चा करना चाहती हूँ, जिसके लिए मुझे ऐसा लगता है कि वह फिल्म हर माँ बाप व बच्चों को एक साथ जरूर देखना चाहिए। उस फिल्म का नाम है– अंग्रेजी मीडियम। कई लोगों ने ये फिल्म देखी होगी। मगर जिन लोगों ने अब तक नहीं देखी होगी वो एक बार इस फिल्म को जरूर देखें और अपने बच्चों को भी जरूर दिखाएँ। जी हाँ यह फिल्म एक पिता व बेटी पर आधारित है। फिल्म में अपने बच्चे की पढ़ाई व उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए एक पिता किस हद तक अपने आप को गिरवी तक रखकर उसे पूरा करता है तथा बच्चों के मन में आने वाली ये ग़लतफ़हमी कि ये तो हर माँ बाप का फ़र्ज़ है और फिर अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। इन सभी सच्चाइयों को बखूबी दर्शाया गया है। मगर फिल्म का अन्तिम दृश्य हृदय को छू जाने वाला एवं सुखदायी है। जिसे देखकर अत्यन्त सुख की अनुभूति होती है। ऐसी फिल्में हमारी नई पीढ़ी व आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत जरूरी हैं एवं प्रेरणादायक भी हैं। अतः मेरी तरफ से अनुरोध है कि आप अपने विद्यार्थियों को यह फ़िल्म ज़रूर दिखाएँ।

आराधना सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गोवरियाँ,
विकास खण्ड–नियामताबाद,
जनपद–चन्दौली।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_9-html

शिक्षण संवाद

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद – गौतमबुद्धनगर से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन गीता यादव जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच, व्यवहार कुशलता और विद्यालय परिवार के आपसी सामंजस्य एवं सहयोग के माध्यम से अपने विद्यालय को विविध शिक्षण गतिविधियों का केन्द्र बनाते हुए सामाजिक विश्वास का केन्द्र बना दिया है तथा बेसिक शिक्षा के विद्यालयों की सबसे चुनौतीपूर्ण समस्या नामांकन एवं ठहराव का भी समाधान प्राप्त करते हुए विद्यालय का नामांकन 80 से 378 एवं उपस्थिति लगभग 80% का लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। जो हम सभी के लिए प्रेरक एवं अनुकरणीय प्रयास हैं।

आइये देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को :

– विद्यालय को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास :–

विद्यालय का नवनिर्माण मेरी नियुक्ति के 2 वर्ष पूर्व ही हुआ था। मूलभूत सुविधाओं का अभाव था।

विद्यालय अभिलेखों को दुरूस्त कर क्रमबद्ध करते हुए जिल्दसाजी कराना।

विद्यालय फर्नीचर की व्यवस्था कराना।

विद्यालय प्रवेश उत्सव एवं मेला लगाना।

अध्यापक की रुचि अनुसार सांस्कृतिक कार्यक्रम की जिम्मेदारी सौंपना।

खेलकूद प्रातः एवं सायंकालीन प्रार्थना सभा का आयोजन संचालन बच्चों के उत्साहवर्धन एवं शिक्षकों को सम्मान देने के लिए समय–समय पर पुरस्कार वितरण का कार्य स्वयं कराना।

न्याय पंचायत स्तर पर अपने विद्यालय में खेल–खेल कार्यक्रम का आयोजन कराना।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता कराना विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण करना।

विद्यालय के बच्चे एवं अभिभावकों को शैक्षिक प्रत्येक वर्ष भ्रमण पर ले जाना जैसे दिल्ली साइंस म्यूजियम, गांधी समाधि स्थल, अक्षरधाम, वृंदावन, मथुरा आदि।

शिक्षक का परिचय :–

गीता यादव (प्रधानाध्यापिका)

प्राथमिक विद्यालय नवादा

विकास क्षेत्र– दादरी

गौतम बुद्ध नगर

प्रथम नियुक्ति– 07/01/2006

वर्तमान विद्यालय में नियुक्ति :10/01/2013

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2716034788674101&id=1598220847122173

"स्कवैश - शारीरिक फिटनेस का वाहक खेल"

शिक्षण संवाद

दुनिया भर में खेला जाने वाला खेल स्कवैश कौशल तथा फिटनेस आवश्यकताओं में टेनिस के समान है। भारत में चूँकि क्रिकेट का बोलबाला है, अतः यहाँ इसके बारे में कम लोग ही जानते हैं।

इतिहास एवं विकास :–

स्कवैश– रैकेट्स, ग्लब्स, गेंद आदि की सहायता से खेले जाने वाले कम से कम पाँच खेलों से विकसित हुआ है। इसका उद्भव फ्रांस में सन 1500 के आसपास के समय माना जाता है। मुख्यतः सर्विस आधारित खेल होने के कारण जिन– जिन यूरोपीय देशों में रैकेट आधारित (टेनिस अथवा टेनिस के समतुल्य) खेल प्रचलन में थे, कालांतर में वहां स्कवैश भी विकसित होकर लोकप्रिय हो गया। 1581 में इस खेल का नामकरण एक अंग्रेज अध्यापक द्वारा ''स्कवैश'' के रूप में किया गया।

1900 के बाद ये खेल विभिन्न स्कूलों, क्लबों और निजी स्कवैश कोर्ट में लोकप्रिय हुआ। विश्व स्कवैश फेडरेशन के अनुसार जून 2009 में विश्व के 188 देशों में 49908 स्कवैश कोर्ट थे। अकेले इंग्लैंड में 8500 तथा जर्मनी, मिस्र, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, मलेशिया, फ्रांस, नीदरलैंड में प्रत्येक देश में एक हजार से अधिक स्कवैश कोर्ट थे।

खेल उपकरण :–

1. स्कवैश कोर्ट – एक व्यक्ति के लिए लम्बाई –31 फिट, चौड़ाई– 18.5 फिट। युगल के लिए लम्बाई– 45 फिट, चौड़ाई– 25 फिट। कोर्ट के सामने की दीवार की ऊँचाई– 20 फिट और प्ले लाइन 16 फिट ऊँची उठी होती है। कोर्ट के दाएँ– बाएँ काँच की दीवार होती है, जिनकी ऊँचाई 18 फिट होती है। पूरे कोर्ट में 18 फिट का क्षेत्र सर्विस क्षेत्र होता है। कोर्ट का निचला हिस्सा फ्लोर कहलाता है जो लकड़ी का बना होता है। कोर्ट में सर्विस बॉक्स बने होते हैं जिन पर खड़े होकर खिलाड़ी को सर्विस करनी होती है। सर्विस करने पर गेंद को सर्विस लाइन के ऊपर ही मारना पड़ता है। सर्विस इतनी तेजी से मारनी होती है कि गेंद दीवार से टकराकर विपक्षी के कोर्ट में गिरे।

2. स्कवैश रैकेट (मानक)– लम्बाई– 686 मिमी0, चौड़ाई– 215 मिमी0 तथा अधिकतम बिना हुआ क्षेत्र–500 वर्ग सेमी0 एवं अधिकतम द्रव्यमान– 255 ग्राम (9 औंस)

3. स्कवैश बॉल– देखने पर लगता है कि इसमें केवल एक ही बॉल का प्रयोग होता है। लेकिन इसमें कई तरह की बॉल का प्रयोग होता है। बॉल का व्यास 39.5 मिमी0 से 40.5 मिमी0, द्रव्यमान 23 से 25 ग्राम। बॉल रबड़ के दो टुकड़ों के मिश्रण से बनी होती है, जिन्हें एक खोखली जगह छोड़ते हुए चिपकाया जाता है। अलग– अलग रंग– नारंगी, डबल पीला, पीला, हरा या सफेद, लाल, नीला आदि की अपनी– अपनी गति एवम भिन्न– भिन्न उछाल होती है।

4. स्निकर शूज

खेल के नियम :–

1. गेम को एक समय में दो(एकल) या चार(युगल) खिलाड़ियों द्वारा खेला जा सकता है।
2. रैकेट के साथ गेंद को पीछे की दीवार पर सीमाओं के भीतर मारना चाहिए।

3. गेंद किसी भी समय बगल की दीवार पर टकरा सकती है, जब तक की किसी समय वह पीछे की दीवार से टकराती है।
4. ''लेट'' उस समय कहा जाता है जब कोई खिलाड़ी गलती से अपने विरोधी के रास्ते मे आ जाता है और रास्ता नहीं निकाल पाता है।
5. जब खिलाड़ी जान बूझकर अपने विपक्षी के रास्ते मे आने की कोशिश करता है तो ''फाउल'' होता है।
6. खिलाड़ी बॉल को दो बार नहीं मार सकता और न ही बॉल को ले जा सकता है।
7. सर्विस के लिए एक पैर सर्विस बॉक्स के भीतर होना चाहिए।
8. एक सर्विस पर लौटने पर खिलाड़ी बॉल को वॉली पर मार सकता है या उसके बाद उछाल सकता है।
9. गेंदों की गति गेंद पर छोटे धब्बों की संख्या और रंगों से निर्धारित होती है।
10. इसमें हमेशा 5 गेम खेले जाते हैं। एक गेम में 15 अंक होते है। गेम जीतने के लिए खिलाड़ी के कम से कम 2 अंक अधिक होने चाहिए। जब तक ये स्थिति नहीं आती तब तक खेल बराबर चलता रहता है।
11. 5 में से 3 गेम जीतने वाला खिलाड़ी विजेता होता है।
12. किसी भी विवाद और बाधा का निपटारा रेफरी द्वारा किया जाता है।

इस खेल के विभिन्न शॉट :–

स्ट्रेट ड्राइव या रेल, बोस्ट या एंगल, वॉली, लॉब, ड्रॉप शॉट, क्रॉस कोर्ट, कील, निक शॉट, ट्रिकल बोस्ट, स्क्वीज बोस्ट, स्किड बोस्ट।

सर्विस एवम खेल प्रक्रिया :–

प्रारम्भ में प्रायः लोगों के ऊपर या नीचे रैकेट को घुमाकर तय किया जाता है कि पहले सर्विस किसकी होगी। यह खिलाड़ी या तो दाएँ या बाएँ बॉक्स से सर्व करने का चुनाव करते हुए प्रथम रैली शुरू करता है। एक सही सर्विस हेतु, सर्वर के एक पैर को सर्विस बॉक्स को छू जाना चाहिए और गेंद मारते समय सर्विस बॉक्स के किसी भी हिस्से को नहीं छूना चाहिए। रैकेट से लगने के बाद, बॉल को सामने वाली दीवार पर सर्विस लाइन से ऊपर और बाहरी रेखा के अंदर टकराना चाहिए और वहाँ से उसे विपरीत क्वार्टर कोर्ट में गिरना चाहिए। प्राप्तकर्ता खिलाड़ी सर्व के सामने की दीवार पर टकराने के बाद वॉली करने का चुनाव कर सकता है। अगर सर्वर पॉइंट जीत जाता है तो दोनों खिलाड़ी अगले पॉइंट के लिए अपने पक्षों को बदल लेते हैं।

सर्व करने के बाद खिलाड़ियों द्वारा बारी– बारी से गेंद को टिन से ऊपर और बाहरी रेखा से नीचे सामने वाली दीवार पर मारा जाता है। गेंद किसी भी समय बगल की या पीछे की दीवार से टकरा सकती है। जब तक कि यह बाहरी रेखा से नीचे लग रही हो। रैकेट से लगने के बाद और सामने की दीवार से टकराने से पहले फर्श पर नहीं लगना चाहिए। जो गेंद बाहरी रेखा के ऊपर अथवा टिन के शीशे से लगी हुई रेखा पर गिरती है, उसे आउट मानते हैं। सामने की दीवार से टकराने के बाद गेंद को एक बार फर्श से टकराने (और बगल की या पीछे की दीवार से चाहे जितनी बार) की अनुमति है, जिसके बाद खिलाड़ी इसे वापिस मारता है। खिलाड़ी कोर्ट में कहीं भी जा सकते हैं लेकिन दूसरे खिलाड़ी की गतिविधियों में असावधानीवश या जान– बूझकर रुकावट डालना मना है। एक शॉट के बाद खिलाड़ी आम तौर पर कोर्ट के केंद्र में वापस आता है। इस प्रकार परिणाम आने तक खेल चलता रहता है।

स्कोरिंग प्रक्रिया :–

यह एक ''सर्विस'' सिस्टम पर आधारित खेल है। इसमें खिलाड़ी को पॉइंट्स लेने के लिए

सर्व प्राप्त करना होता है। कभी– कभी सर्व लेने को ''ऑफेंस'' माना जाता है। विरोधी (जिसके पास सर्व नहीं है) को रक्षात्मक माना जाता है और उसे सर्व पाने के लिए स्कोर करना होता है और फिर पॉइंट्स अर्जित करने के लिए फिर से स्कोर करना होता है।

खेल के दौरान, अंक अर्जित होने वाली स्थितियाँ निम्न हैं–

1. प्राप्तकर्ता, गेंद के दो बार टप्पा खाने से पहले उसे मारने में विफल हो जाता है।
2. प्राप्तकर्ता गेंद के टप्पा खाने से पहले उसे सामने की दीवार पर मारने में विफल रहता है
3. प्राप्तकर्ता गेंद को आउट कर देता है (बाहरी लाइन के ऊपर या बाहर या टिन पर)
4. स्ट्रोक, जहाँ प्राप्तकर्ता अंक के दौरान सर्वर को बाधित करता है (हस्तक्षेप या बाधा से)

सर्वर द्वारा उपरोक्त में से कुछ भी करने पर या सर्व को मारने में विफल रहने पर, खिलाड़ी अपनी भूमिकाओं को बदल लेते हैं और प्राप्तकर्ता अगले अंक को सर्व करता है, लेकिन उसको कोई अंक नहीं मिलता है।

खेल 9 अंक तक तथा अपवादस्वरूप, प्राप्तकर्ता द्वारा ''सेट दो'' का चुनाव कर सकने की स्थिति में अंक 10 तक खेल जाता है। प्रतिस्पर्धा मैचों को आमतौर पर ''बेस्ट ऑफ फाइव'' तक खेल जाता है। 11 जुलाई 2008 से **PARS TO AA** स्कोरिंग प्रणाली लागू है

स्कवैश खिलाड़ी एवं चौंपियनशिप :–

पहला ब्रिटिश ओपन चौंपियनशिप 1930 में आयोजित किया गया जिसे चार्ल्स रीड ने जीता था। प्रारम्भिक खिलाड़ियों में मिस्र के एफ.डी.अम्ब्रे 1930, ऑस्ट्रेलिया के ज्योफ़ हंट ने 1960– 1970 में रिकॉर्ड 8 बार तथा पाकिस्तान के जहांगीर खान ने 1980– 1990 के दशक में रिकॉर्ड 10 बार ब्रिटिश ओपन जीता। पाकिस्तान के जानशेर खान ने रिकॉर्ड 8 बार वर्ल्ड ओपन जीता। दोनों, जहांगीर खान और जानशेर खान, दिग्गज खान वंश का अंग हैं जिसे किंवदंती बन चुके हाशिम खान ने 1940 और 1950 के दशक में शुरू किया था

महिला चौंपियनशिप 1921 में शुरू हुई तथा पहली चैंपियन इंग्लैंड की जॉयस केव और नैंसी केव रहीं। वर्तमान में पुरुष प्रतिस्पर्धा में प्रथम रैंक– रामी एशोर (मिस्र) तथा महिला प्रतिस्पर्धा में प्रथम रेंक– निकोल डेविड (मलेशिया) खिलाड़ी हैं।

भारतीय खिलाड़ी :– पुरुष वर्ग– सौरव घोषाल तथा अभिषेक प्रधान प्रमुख खिलाड़ी हैं जबकि हरिंदर पाल संधू और अभय सिंह उभरते हुए सितारे हैं। महिला वर्ग– दीपिका पल्लीकल भरतीय स्कवैश की पहचान हैं। अर्जुन पुरस्कार तथा पदम् श्री से सम्मानित दीपिका टॉप 10 में जगह बनाने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी हैं। इन्होंने रिकॉर्ड 15 बार नेशनल चौंपियनशिप जीती है। जोशना चिनप्पा दूसरी प्रमुख भारतीय महिला खिलाड़ी हैं। इन्होंने 2005 में ब्रिटिश जूनियर ओपन जीता था। इनके अतिरिक्त तन्वी खन्ना, सुनयना कुरुविला और सान्या वत्स भारतीय महिला स्कवैश के प्रमुख नामों में हैं। अपने देश मे स्कवैश को और अधिक अपनाने एवम प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है।

दीपक कौशिक,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भीकनपुर बघा,
विकास क्षेत्र– कुन्दरकी,
जनपद– मुरादाबाद।

वृक्षासन

शिक्षण संवाद

प्राकृतिक तरीकों को अपनाकर व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रहता है। इस गूढ़ रहस्य को जो समझ लेता है, वही अधिक सुखी रहता है।

इसलिए बचपन से ही बच्चों को प्रकृति के समीप रखने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

सभी को स्वस्थ रहने के लिए योगासन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। योग शब्द युज शब्द से बना है। युज का अर्थ होता है– जोड़ना या मिलाना। योग करने पर शरीर और मन दोनों का संतुलन बनता है। योग एक प्रकार से आसन करने का अभ्यास है। शरीर और मस्तिष्क दोनों स्वस्थ रहने पर बच्चों का मन पढ़ाई में लगता है।

योग के आठ अंग होते हैं – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि। आज हम वृक्षासन के बारे में जानेंगे और जानेंगे कि बच्चों के लिए कितना लाभकारी है।

वृक्षासन दो शब्दों से मिलकर बना है– वृक्ष का अर्थ पेड़ और आसन योग मुद्रा की ओर दर्शाता है। इस आसन की योग मुद्रा एकदम अटल होती है जो वृक्ष की आति की तरह लगती है। यह बहुत ध्यानात्मक आसन है। इसका वर्णन राजाओं के रहन – सहन और जीवन शैली में भी मिलता है। यह आसन शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार से संतुलन बनाये रखने में सहायक है।

वृक्षासन करने का तरीका–

1– आप सबसे पहले सीधे खड़े हो जाएँ या ताड़ासन में आ जाएँ।
2– पैरों के बीच की जगह कम करें और हाथों को सीधा रखें।
3– दायाँ पैर उठायें और दाएँ हाथ से टखना पकड़ें।
4– दाईं एड़ी को दोनों हाथों की सहायता से बाईं जांघ के ऊपरी भाग यानी जोड़ पर रखें।
5– ध्यान रहे मुड़े पाँव को दूसरे पाँव के साथ समकोण बनायें।
6– अब दोनों हथेलियों को जोड़ें और ऊपर की ओर धीरे– धीरे उठायें।
7– दोनों हाथ सिर से सटे होने चाहिए।
8– जितना सम्भव हो सके शरीर का संतुलन बनाएँ।
9– अब धीरे– धीरे हाथों को नीचे लायें और मूल अवस्था में लौट आयें।
10– फिर इस प्रक्रिया को दूसरे पैर की ओर से करें।
11– इस प्रकार एक चक्र पूरा हुआ।
12– इस तरह से आप इस आसन का 3 से 5 चक्र पूरा करें।

वृक्षासन से लाभ –

1– छोटे बच्चों का कद बढ़ाने में बहुत ही सहायक है।
बच्चों को इस आसन का अभ्यास नियमित करना चाहिए।

2– वजन को घटाने में सहायक है।

3– पैरों को मजबूत करता है ।

4– तनाव को दूर करने में भी यह आसन लाभकारी है।

5– रीढ़ की हड्डी भी इस आसन से मजबूत होती है।

6– इस आसन का नियमित अभ्यास करने से शारीरिक और मानसिक दोनों का संतुलन बढ़ता है।

सावधानी–

1– घुटने के दर्द से अधिक पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।

2– अधिक एड़ियों के दर्द होने पर भी यह आसन नहीं करना चाहिए।

प्रतिमा उमराव
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय अमौली,
शिक्षा क्षेत्र– अमौली,
जनपद– फतेहपुर।

शिक्षण तकनीकी

पपेट शो से अधिगम

परिचय

क्या आप जानते हैं कि दुनिया भर में कई शिक्षक छोटे बच्चों को सिखाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल कर रहे हैं? कठपुतली–नाटक के ऐसे लाभ हैं जो हमारे लिए अज्ञात हो सकते हैं, विशेषकर शिक्षक के लिए!

हाथ कठपुतलियाँ नाटक का एक स्वाभाविक और मजेदार विस्तार हैं जिसे छोटे बच्चे बहुत आसानी से निभाते हैं। थोड़े से प्रोत्साहन के साथ, हाथ की कठपुतलियाँ आपके बच्चों को कुछ महत्वपूर्ण सीखने के कौशल विकसित करने में मदद करेंगी। हैंड पपेट प्ले कल्पनाशील और ओपन एंडेड है और वयस्कों के लिए समान रूप से मुक्त है। अपने बच्चे को आगे बढ़ने दें और आप जहाँ एक साथ जाएँगे, आप चकित रह जाएँगे।

हममें से अधिकांश ने कठपुतलियों के साथ खेला है। जब हम छोटे थे, कठपुतलियों का उपयोग मुख्य रूप से मनोरंजन प्रयोजनों के लिए किया गया था। वे हर दूसरे खिलौने की तरह थे जो हमारे स्वामित्व में थे। हालाँकि, इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दुनिया भर में कई शिक्षक छोटे बच्चों में सीखने के लिए कठपुतलियों का उपयोग कर रहे हैं। कठपुतली–नाटक के ऐसे लाभ हैं जो हमारे लिए अज्ञात हो सकते हैं, विशेषकर माता–पिता के लिए!

लाभ

1. बोलने के कौशल में सुधार

बच्चे अपने साथियों के सामने जोर से पढ़ने या बोलने में शर्म महसूस कर सकते हैं। जब ऐसा होता है, तो वे अपने कठपुतली ''दोस्तों'' के सामने ऐसा करने को तैयार रहते हैं। जैसे–जैसे वे अपनी कठपुतलियों के साथ कहानियाँ गढ़ते हैं, उनके भाषा कौशल में भी सुधार होता जाता है। वे वाक्यों का निर्माण करना सीखते हैं और अपनी कहानी में तत्वों का वर्णन करने के लिए शब्द ढूँढते हैं।

इसके अलावा, अनुसंधान से पता चला है कि जब बच्चे किसी कठपुतली के पीछे होते हैं तो वे अधिक सहज महसूस करते हैं क्योंकि वे कठपुतलियों के साथ खेलने की विभिन्न संभावनाओं का पता लगाते हैं।

2. समूह की भागीदारी बढ़ाता है

समूह सेटिंग में यह भाई–बहन या कक्षा के बीच हो, कठपुतलियों

का उपयोग बच्चों की भागीदारी के स्तर को बढ़ाने और मजेदार तत्व जोड़ने के लिए किया जा सकता है। जब एक नया खिलौना पेश किया जाता है तो बच्चे उत्साहित हो जाते हैं और शिक्षक उन्हें कठपुतलियों का उपयोग करके एक निश्चित विषय के बारे में कहानियाँ बनाने या अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति दे सकते हैं।

वे अपनी कल्पना के अनुसार एक परी कथा के अंत को बदल सकते हैं। स्नो व्हाइट को बुरी रानी से क्यों भागना चाहिए? वह उसे हराने के लिए पीछे क्यों नहीं रह सकती!
आज ही अपने बच्चे के लिए एक कठपुतली पात्र का परिचय दें और उसकी कल्पना को खिलते हुए देखें क्योंकि वह कहानीकार बन जाता है या सामाजिक सेटिंग्स में अपने आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

3. कल्पना को उत्तेजित करता है

कठपुतली–नाटक का सबसे स्पष्ट लाभ बच्चे की कल्पना और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना है। हमने बच्चों को अपनी गुड़िया से जुड़ी कहानियों के साथ आते देखा है, उन्हें नाम देने से लेकर उनके अन्य खिलौनों के साथ परिदृश्यों को विस्तृत करने के लिए यह एक बार्बी या एक ट्रांसफार्मर हो! कठपुतलियों के साथ, खेल और अधिक व्यक्तिगत और मजेदार हो जाता है, उन्हें हेरफेर करने की क्षमता के साथ, उनके अंगों और सिर को हिलाते हैं।

शिक्षक अपने बच्चों को परियों की कहानियों और अन्य कहानियों को भी पढ़ या बता सकते हैं और कठपुतलियों का उपयोग करके इन कहानियों को फिर से बनाने के लिए कह सकते हैं। यह उन बातों को पुष्ट करता है जो उन्होंने अभी तक सुनी कहानियों से बनाए रखी हैं और माता–पिता अपने बच्चों के किस्सों को देखने में आनंद ले सकते हैं।

4. भावनात्मक विकास

कभी–कभी बच्चे शर्मीले और पीछे हट जाते हैं और अक्सर माता–पिता के पास अपनी भावनाओं को साझा करने के लिए एक कठिन समय होता है। ऐसे मामलों में, कठपुतली एक ''दोस्त'' बन जाती है जिसे बच्चे बिना किसी असुविधा के अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि उनके पास अपनी भावनाओं को बाहर निकालने के लिए एक सुरक्षित स्थान है या वे अपने माता–पिता को अपनी नाखुशी के बारे में बताने के लिए कठपुतलियों का उपयोग भी कर सकते हैं।

5. मोटर कौशल में सुधार

कठपुतलियों को स्थानांतरित करने के लिए उँगलियों का उपयोग करते समय, आपका बच्चा अपने ठीक मोटर कौशल (वस्तुओं को उठाने और धारण करने जैसी छोटी क्रियाओं) में सुधार करता है। इस तरह से वह यह जानने में सक्षम है कि कठपुतली की बांह या पैर को हिलाने के लिए उसे किस उँगली को झुलाना पड़ता है। मस्तिष्क–हाथ समन्वय का एक तरीका क्या है।

6. शिष्टाचार सीखें

माता–पिता अपने बच्चों को अच्छे शिष्टाचार और शिष्टाचार सिखाने की कठिनाइयों को जानते हैं और कई बार बच्चों को प्राधिकरण के आँकड़ें सुनने में मुश्किल होती है, चाहे वे माता–पिता, देखभाल करने वाले या शिक्षक हों। कठपुतलियों का उपयोग बच्चों को मूल्यवान संदेशों को संप्रेषित करने का एक आसान तरीका हो सकता है क्योंकि संचार मजेदार और असामान्य तरीके से किया जाता है न कि पारंपरिक या सख्त स्थिति से।

6. संचार और सामाजिक कौशल

हैंड पपेट्स बोलने और सुनने के कौशल को विकसित करने के लिए एक आदर्श स्प्रिंगबोर्ड हैं। बच्चे अक्सर कठपुतलियों के साथ अधिक आसानी से संवाद करते हैं, जिससे उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का आत्मविश्वास मिलता है। शर्मीले बच्चे दूसरों के साथ उन भूमिकाओं से परिचित हो सकते हैं जो वे लेते हैं।

बच्चे नए व्यक्तित्वों पर कोशिश करने और उन्हें फिर से उतारने के लिए स्वतंत्र हैं, अपने हाथ पर कठपुतली के साथ, इस प्रक्रिया में अपना खुद का व्यापक विस्तार होता है। शेर और शार्क जैसे डरावने जानवरों के हाथ की कठपुतलियाँ या कछुए जैसे शर्मीले बच्चे बच्चों को असहज भावनाओं को समझने में मदद कर सकते हैं। कठपुतली का खेल डर और कुंठाओं को दूर करके अपनी दुनिया पर कुछ नियंत्रण हासिल करने का अवसर प्रदान करता है।

7. रचनात्मक कौशल

हैंड पपेट प्ले छोटे बच्चों को अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करने के लिए मजबूर करके रचनात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है। वे भूमिकाएँ, नियम, स्थितियाँ और समाधान बनाते हैं। यह कल्पनात्मक नाटक के माध्यम से है कि बच्चे कल्पना और के बीच के अंतर को समझने के लिए आते हैं।

उदाहरण के साथ निष्कर्ष

टीम ने दिल्ली–राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 15 सार्वजनिक और निजी स्कूलों में कठपुतली शो की स्क्रिप्ट का प्रदर्शन किया, जो लगभग 2800 छात्रों (12–14 वर्ष की आयु) तक पहुँच गया। उन्हें प्रदर्शन के लिए तैयार करने और कठपुतली शो की स्क्रिप्ट का मसौदा तैयार करने में मदद करने के लिए, टीम ने छात्रों के साथ प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए, ताकि उन्हें पर्यावरणीय स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में अपने व्यक्तिगत चिंताओं और अनुभवों को समझने और समझने में मदद मिल सके। नई दिल्ली के एक झोपड़पट्टी, शादिपुर से ओलावृष्टि, खुले में शौच, कचरा छाँटने और पानी की कमी जैसी समस्याओं की पहचान करने वाली महिलाएँ थीं। प्रशिक्षण सत्रों ने कठपुतलियों को नेत्रहीन रूप से प्रभावशाली और इंटरेक्टिव कहानियों को विकसित करने में मदद की जो वैज्ञानिक रूप से भी ध्वनि थी। सवालों और संकेतों की तरह ट्रिगर्स का उपयोग न केवल शो को इंटरेक्टिव बनाता है। उन्होंने छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न होने की अनुमति भी दी।

प्रत्येक शो के अंत में, छात्र उत्साहित थे और अपने साथियों के साथ मुद्दों पर चर्चा करने के बारे में उत्साह प्रदर्शित करते थे। दिलचस्प बात यह है कि स्कूलों में से एक में, प्रदर्शनों ने आसपास के स्कूलों से भीड़ में खींच लिया, अन्य स्कूलों ने इसी तरह के प्रदर्शन की मेजबानी करने का अनुरोध किया, इस प्रकार शिक्षा में कला की प्रभावी भूमिका को उजागर किया।

राजर्षि सिंह,
प्राथमिक विद्यालय रामवल,
विकास खण्ड–रेवतीपुर,
जनपद–गाजीपुर।

सदविचार

"महान विचार ही कार्य रूप में परिणत होकर महान कार्य बनते हैं।"

विनोबा भावे

विनायक नरहारी विनोबा भावे अहिंसा और मानवाधिकारों के एक भारतीय पक्षधर थे। विनोबा भावे जी को भारत के राष्ट्रीय शिक्षक के रूप में जाना जाता है। इसलिये इनके विचारों में भी एक शिक्षक की भूमिका उज्जवलित होती है। अपने विचारों के कारण ही विनोबा भावे जी महात्मा गाँधी जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में आज भी प्रकाशमान हैं। विनोबा भावे जी को स्नेह से विन्या कहा जाता था। बहुत कम उम्र में भगवत गीता पढ़ने के बाद विनोबा भावे जी उससे बहुत अधिक प्रभावित हुए और भगवत गीता का सार भी समझ गये। विनोबा भावे जी के सदविचारों में भी इसकी झलक देखने को मिलती है –

- हम हमारे बचपन को फिर से नहीं प्राप्त कर सकते हैं, यह तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे किसी ने पेन्सिल से कुछ लिखकर पुनः उसे मिटा दिया है।
- अगर जीवन में सीमाएँ नहीं होंगी तो स्वतंत्रता का मोल नहीं होगा।
- सत्य को कभी भी किसी प्रमाण की जरूरत नहीं होती है।
- अगर हम हर रोज एक ही काम करते हैं, तो वह हमारी आदत में शामिल हो जाता है और तब हम अन्य कार्य करते हुए भी उस कार्य को कर सकते हैं।
- ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार से समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।
- प्रतिभा का अर्थ है, बुद्धि में नई कोपलें फूटते रहना।
- नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण हैं।

विनोबा भावे जी के विचारों में स्वतंत्रता, सत्य की विजय एवं कर्म को प्रधानता दी गई है। विनोबा भावे जी एक कुशाग्र बुद्धि बालक थे। इन्होंने प्रमाण पत्रों से ज्यादा स्वयं के ज्ञान को सर्वोपरि समझा, इसीलिए अपने स्कूल और कालेज के प्रमाण पत्रों को आग में डाल दिया था। सर्वोदय आन्दोलन में एक समाजकर्ता के रूप में इन्होंने गरीबी और अमीरी के भेदभाव को कम किया तथा सभी को एकजुट भी किया।

11 सितम्बर 1895 को जन्मे आचार्य विनोबा भावे जी एक राष्ट्रप्रेमी, राष्ट्रीय शिक्षक एवं एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिनके किये गये कार्यों एवं सदविचारों का हम आज भी अनुसरण करते हैं।

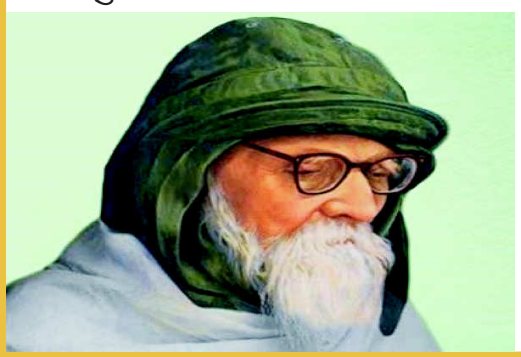

ऐसी महान शख्सियत को शत–शत नमन।

अनुप्रिया यादव,
सहायक अध्यापिका,
कम्पोजिट विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

नवाचार

वस्तुओं पर उनके नाम की पर्ची लगाओ।
रोज देखो और देखते-देखते सीख जाओ।

नवाचार का विचार–

इस नवाचार का विचार मेरे दिमाग में तब आया जब मैंने अपने स्कूल के कक्षा–4, 5 के 2 बच्चों को आपस में 'Poem' की स्पेलिंग सुनाते हुए सुना तो हमने बच्चों से पूछा कि ये तो हमने लिखायी नहीं फिर याद कैसे की, तो बच्चों ने दरवाजे पर लगे 'Poem Plant' की तरफ इशारा करते हुए बताया कि मैम यहाँ से।

बच्चों के इस जबाव को सुनकर मेरे दिमाग में ये विचार आया कि जब बच्चे किसी एक स्पेलिंग को देखते–देखते सीख सकते हैं तो क्यों न सभी कक्षाओं, बरामदे, कार्यालय की सभी वस्तुओं व मैदान में लगे पेड़– पौधों पर सम्बंधित के नाम की पर्ची (अंग्रेज़ी व हिंदी में) लिखकर लगा दी जाए जिससे कि सभी बच्चे उन वस्तुओं के नाम (अंग्रेजी व हिंदी में) सहज रूप में देखते– देखते ही सीख जाएँ।

नवाचार का क्रियान्वयन–

विचार को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए कागज की छोटी छोटी पर्चियाँ बनाकर उन पर बच्चों की सहायता से वस्तुओं के नाम लिखकर सम्बन्धित वस्तुओं पर चस्पा कर दीं।

परिणाम–

परिणाम अगले ही दिवस से सकारात्मक रूप से सामने आने लगा। कक्षा में कुछ ही दिनों बाद यह पूछने पर कि कितने बच्चों को लगाई गई पर्चियों वाले वस्तुओं के नाम याद हो गए तो जबाव में 60% से भी ज्यादा बच्चों के हाथ ''हाँ'' में ऊपर थे।

अंततः नवाचार सार्थक रहा और परिणाम सकारात्मक।

रश्मि – प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय गुलाबपुर
अंग्रेजी माध्यम, वि0ख0– भाग्यनगर,
जनपद– औरैया।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद